भाग्य का खेल

सिद्धचक्रमंडित नवपद की आराधना के फलस्वरूप श्रीपाल के जीवन में सुखों की बहार आ गई थी। अपनी माता एवं पत्नी के साथ वह राजा प्रजापाल के महलों में आनन्दपूर्वक रह रहा था। एक दिन संध्या के समय घोड़े पर बैठकर घूमने निकला। नगर की जनता छतों, खिड़कियों व झरोखों से खड़ी उसे देख रही थी। तभी एक लड़की ने जो दो दिन पहले ही ससुराल से आई थी। अपनी माँ से पूछा–

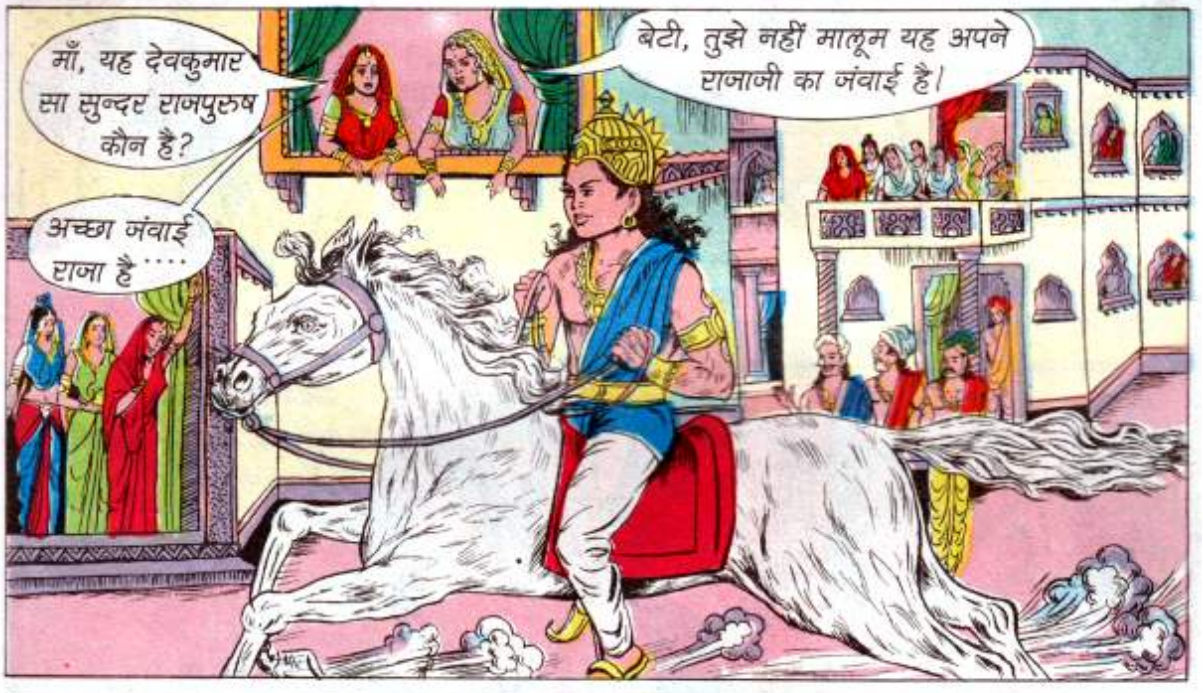

श्रीपाल के कानों में यह शब्द पड़े तो उसके कलेजे में तीर-सा चुभ गया। वह महलों में आकर सोचने लगा–

विस्तृत जानकारी के लिए इसका प्रथम भाग "सिद्ध चक्र का चमत्कार" पढ़ें जो दिवाकर चित्र कथा के अंक १३ में प्रकाशित हो चुका है।

मन ही मन कुछ निर्णय कर श्रीपाल शैय्या से खड़ा हो गया और तलवार, कटार, तीर-कमान बाँधकर बाहर जाने की तैयारी करने लगा। तभी उसकी माँ ने पूछा–

मैनासुन्दरी पास ही खड़ी थी। उसने श्रीपाल से पूछा–

उसके पश्चात् माँ तथा पत्नी मैना सुन्दरी से विदा लेकर श्रीपाल अकेला वन की ओर निकल पड़ा।

कई दिनों तक जंगलों की यात्रा करते हुये वह घने जंगल में जा पहुँचा। जहाँ एक तपस्वी साधना कर रहा था। श्रीपाल ने तपस्वी को प्रणाम किया और वहीं बैठ गया।

रात के समय हिंसक पशुओं ने उपद्रव मचाया तो श्रीपाल ने धनुष की टंकार की।

हिंसक पशु भयभीत होकर भाग गये।

प्रातः सूर्योदय के समय तपस्वी ने आँखें खोली और श्रीपाल से कहा–

सत्पुरुष, तुम आज जंगली जीवों को नहीं भगाते तो मेरी साधना अधूरी रह जाती। तुम्हारे कारण ही मेरी साधना सफल हुई।

तपस्वीराज यह तो मेरा कर्त्तव्य है।

प्रसन्न होकर तपस्वी ने दो जड़ी (औषधियाँ) अभिमंत्रित करके श्रीपाल को भेंट दीं और कहा–

वत्स ! यह जलतरणी औषधि है पैरों पर लेप करके आप पानी में मछली की तरह तैर सकते हैं।

... और यह शस्त्रघात-निवारणी औषधि है। भुजा पर बाँधने से किसी भी प्रकार के शस्त्र का प्रहार नहीं हो सकता है।

धन्यवाद तपस्वीराज।

श्रीपाल तपस्वी की भेंट स्वीकार कर आगे चल दिया।

चलते-चलते श्रीपाल भंडूच नगर में पहुँच गया। भंडूच एक बड़ा व्यापारिक बंदरगाह था। श्रीपाल एक उद्यान में विश्राम करने लगा। तभी कुछ सैनिक घूमते हुये उधर आये और श्रीपाल को देखकर आपस में बातें करने लगे।

देखो, यह पुरुष बत्तीस शुभ लक्षणों वाला दीखता है। चलो, अपना काम बन गया।